International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अनुसूचित जातियों का ऐतिहासिक पुनरावलोकन

डॉ0 विकास कुमार
इतिहास विभाग,
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

भारतीय संस्कृति कोश के अनुसार ''प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में चार वर्णों में से चतुर्थ वर्ण का व्यक्ति 'शूद्र' था। वर्ण–व्यवस्था का आरम्भ कर्म पर आधारित था। बाद में धीरे–धीरे यह जन्म पर आधारित और व्यक्ति के अभ्युदय के मार्ग की बाधा बन गयी। इसीलिए विचारकों, सन्तों और समाज–सुधारकों ने इसके विरूद्ध आवाज उठायीं। शूद्र वर्ण के प्रति होनेवाले सामाजिक अन्याय का सब ओर से विरोध होने लगा। अब वर्ण–व्यवस्था समाप्तप्राय है और चतुर्थ वर्ण के प्रति मध्यकाल में होनेवाला भेदभाव आज सामाजिक रूप से तो निन्दनीय है ही, कानूनी दृष्टि से दंडनीय अपराध भी है।''

पाणिनि के व्याकरण के अनुसार 'शूद्र' शब्द ही व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई गयी है–श ''शुच् या शुक्+र। यहाँ प्रत्यय र की व्याख्या कठिन जान पड़ती है।'' कात्यायन ने इसे काल्पनिक और अस्वाभाविक माना है।'' पुराणों की परम्परा के अनुसार 'शूद्र' शब्द 'शच्' धातु से निस्पन्न है, जिसका अर्थ होता है सन्तप्त होना। 'जो खिन्न हुए, और भागे, शारीरिक श्रम करने के अभ्यस्त थे तथा दीन–हीन थे, उन्हें शूद्र बना दिया गया।' दलित का अर्थ भी प्रकारान्तर से वहीं होता है। 'वायु पुराण' में ही आगे कहा गया है–''शोचन्तश्च परिचर्यासु ये रताः निस्तेजसो अल्पवीर्याश्च शूद्रांस्तानव्रवीन्तु सः'' अर्थात् जो परिचर्या (सेवा–शुश्रुषा) में लगे रहते हैं, जो निस्तेज और अल्पवीर्यवाले हैं, उन्हीं को शूद्र कहा जाता है। 'भविष्य पुराण' के अनुसार शूद्रों को इसलिए शूद्र कहा गया, क्योंकि उन्हें वैदिक ज्ञान जूठन के रूप में प्राप्त होता था–''ये ते श्रुतेद्रुर्तिं प्राप्ताः शूद्रास्तेनेह कीर्तिताः।''

'वेदान्त सूत्र' में बादरायणर ने शूद्र की व्युत्पति की व्याख्या की है। उन्होंने शूद्र शब्द को दो भागों में विभक्त किया–'शुक' (शोक) और 'द्र' (दौड़ना)– 'शुगस्य तदनादर श्रवणात् तदाद्रवणतः सूच्यते।'' इसकी टीका करते हुए शंकराचार्य ने जो व्याख्याएँ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

दी हैं, उसके हवाले से रामशरण शर्मा कहते हैं ''शंकर ने इस बात की तीन वैकल्पिक व्याख्याएँ की हैं कि जनश्रुति शूद्र क्यों कहलाया : (1) वह शोक के अन्दर दौडत्र आया'—उस वा शोक छा गया' (शुचम् अभिदुद्राव), (2) 'उस पर शोक दौड़ आया'—उस वा शोक छा गया' (शुचा वा अभिद्रुवे) और (3) 'अपने शोक के मारे वह रैक्व दौड़ गया' (शुचा वा रैक्वम् अभिदुद्राव)। शंकर का निष्कर्ष है कि शूद्र शब्द के विभिन्न अंगों की व्याख्या करने पर ही उसे समझा जा सकता है, अन्यथा नहीं।'' किन्तु ''शूद्र शब्द का व्युत्पत्त्यर्थ निकालने के जो प्रयास हुए हैं, वे अनिश्चित से लगते हैं और उनसे वर्ण की समस्या सुलझाने में शायद ही कोई सहायता मिलती है।''

ज्ञातव्य हो कि ये सभी व्याख्याएँ वेदकालीन शूद्र राजा जानश्रुति और शूद्र ऋषि रैक्व (बढ़ई, गाड़ीवान) को लेकर ही की गयी है। रामशरण शर्मा ने शूद्रों की उत्पत्ति सम्बन्धी पाणिनि के उणादि सूत्र, बादरायण की व्युत्पत्ति और शंकर द्वारा उसकी व्याख्या आदि को 'अपर्याप्त और असन्तोषजनक' माना है। यह जानश्रुति—रैक्व प्रसंग वेद और छांदोग्य उपनिषद् में आया है। ''कहा जाता है कि शंकर ने जिस जानश्रुति का उल्लेख किया है, वह 'अथर्व वेद' में वर्णित उत्तर—पश्चिम भारत के निवासी महावृषों पर राज्य करता था। यह अनिश्चित है कि वह शूद्र वर्ण का था। वह या जो शूद्र जनजाति का था या उत्तर—पश्चिम की किसी जाति का था, जिसे ब्राह्मण लेखकों ने शूद्र रूप में चित्रित किया है।'' सच तो यह है कि शूद्रों की स्वरूप सम्बन्धी तमाम अवधारणाएँ परवर्ती काल में उनकी हेय स्थिति को लक्ष्य करके बनी हैं।

इसलिए भले ही वे पूर्ववर्ती प्राचीन काल में अच्छी स्थिति में रहे हों, यह शब्द उनकी सामाजिक हीनता और निम्न स्थिति का ही बोध कराता है। वैदिक साहित्य में जहाँ शूद्रों की स्थिति का आधार आर्थिक हैं, वहीं बौद्धकाल में इसे सामाजिक कर दिया गया है। किन्तु ''बौद्धों द्वारा प्रस्तुत व्याख्या भी ब्राह्मणों की व्याख्या की ही तरह काल्पनिक मालूम होती है। बुद्ध के अनुसार शूद्रों की स्थिति ''सुद्धा त्वेव अक्खरं उपनिब्बतम्' या 'लुदआचारा खुद्दचाराति' थी; अर्थात् जिन व्यक्तियों को आचरण आतंकपूर्ण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

और हीन कोटि का था, वे सुद्द' (संस्कृत–शूद्र) कहलाने लगे और इस तरह 'सुद्द' (संस्कृत–शूद्र) शब्द बना।''

अभी ''हाल में एक लेखक ने शूद्र शब्द की व्युत्पत्ति इस रूप में की है–'धातु 'श्वी' (मोटा होना) + धातु 'द्रु' (दौड़ना)। उनकी राय है कि इस शब्द का अर्थ है 'ऐसा व्यक्ति जो स्थूल जीवन की ओर दौड़े।' अतएव उनकी दृष्टि में शूद्र 'ऐसा गँवार है, जो शारीरिक श्रम करने के लिए ही बिना है।'' किन्तु इन तमाम व्याख्याओं और परिभाषाओं से केवल शूद्रों के प्रति परम्परावादी हीन मनोवृत्ति का ही पता चलता है, जो इनकी वास्तविक उत्पत्ति और स्थिति पर प्रकाश नहीं डालतीं। फिर भी इतना तो स्पष्ट ही है कि तत्कालीन समाज में शूद्रों का जीवन उपेक्षित था। ब्राह्मणों के लिए शूद्र शब्द गाली के समान गर्हित था। वे सामान्य लोगकों को शूद्र कहकर गाली भी देते थे।

शूद्रों के उद्‌भव के सम्बन्ध में डॉ. अम्बेदकर, जी.जे. हेल्ड, दत्ता आदि विद्वानों के अनुसार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ''आन्तरिक और बाहरी संघर्षों के कारण आर्य या आर्य–पूर्व लोग ही शूद्र की स्थिति में पहुँच गये।'' चूँकि संघर्ष मुख्यतया मवेशी के स्वामित्व को लेकर और बाद में भूमि को लेकर होता था, अतः जिनसे ये वस्तुएँ छीन ली जाती थीं और जो अशक्त हो जाते थे, वे नये समाज में चतुर्थ वर्ण कहलाने लगे। फिर जिन परिवारों के पास इतने अधिक मवेशी हो गये और इतनी अधिक जमीन हो गयी कि वे स्वयं सँभाल नहीं पाते थे, तो उन्हें मजदूरों की आवश्यकता हुई, और वैदिक काल के अन्त में ये ही शूद्र कहलाने लगें। ''वास्तविकता यह है कि आर्थिक तथा सामाजिक विषमताओं के कारण आर्य और आर्येतर, दोनों के अन्दर श्रमिक समुदाय का उदय हुआ और ये श्रमिक आगे जाकर शूद्र कहलाये।''

इस प्रकार भारतीय समाज व्यवस्था में शूद्र सबसे निचले पादान पर रहे हैं। किन्तु दलित शब्द बिल्कुल नया है। यह आधुनिक मराठी, गुजराती, हिन्दी और अन्य अनेक भारतीय भाषाओं का एक अति प्रचलित शब्द है, जिसका सामान्य अर्थ होता है दरिद्र और उत्पीड़ित। दलित भी शूद्र ही हैं। किन्तु शूद्र और दलित की सामाजिक स्थिति में पर्याप्त अन्तर है। शूद्र सबसे निचले स्तर पर ही सही चतुर्वर्ण्य व्यवस्था में शामिल है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

दलित भी शूद्र की श्रेणी का ही वर्ग है। महात्मा फूले ने इन्हें 'अतिशूद्र' कहा था। किन्तु सभी दलित चतुर्वर्ण्य व्यवस्था में शामिल नहीं हैं। वैसे तो दलित का सामान्य अर्थ दबा–कुचला और अवमानित–प्रताड़ित प्राणी होता है। किन्तु आज तक के प्रचलित अर्थ में यह केवल भारत की अनुसूचित जाति और जनजातियों के अर्थ में ही रूढ़ हो गया है। इसमें दलित वर्ग से गैर–हिन्दू धर्मों में धर्मान्तरित समुदाय भी आते हैं।

आज के प्रचलित अर्थ में शूद्र सेवा धर्म (नाईगिरी, बढ़ईगिरी, घड़ा आदि बनाने के जातीय पेशे) से जुड़े सभी लोगों को कहा जाता है; जबकि दलित केवल हाल–हाल तक अन्त्यज समझे जानेवाले अनुसूचित जाति (हरिजन) और नगर से बाहर रहनेवाले अनुसूचित जनजाति (आदिवासी) आदि लोग हैं। 'दलित' शब्द का कोशीय अर्थ है– जिसका दलन और दमन हुआ है, जो दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सतया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनष्ट, मर्दित, पस्त–हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि हो। पर सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक सन्दर्भों में इसे एक भिन्न सांस्कृतिक अर्थ मिल गया है। आन्दोलन और साहित्य के साथ मिलकर यह शब्द सहज ही एक विशिष्ट अर्थ को सूचित कर देता है, जो भारतीय सन्दर्भ में अन्त्यजों (अछूतों) और अभिवंचित जनजातियों के लिए रूढ़ है। ''इस विशिष्ट सन्दर्भ में सबसे पहले इस शब्द का इस्तेमाल सत्तर के दशक की शुरूआत में बाबा साहेब अम्बेदकर के नवबौद्ध अनुयायियों ने किया था।'' वहाँ दलित शब्द की जो व्याख्या की गयी थी, उसका भाव था कि ''जो तोड़ दिया गया है और जिसे उसके सामाजिक दर्जे से ऊपर बैठे लोगों ने जान–बूझकर नियोजित रूप से कुचल डाला है। इस शब्द में छुआछूत, कर्म–सिद्धान्त और जातिगत श्रेणीक्रम का नकार निहित है।''

इस प्रकार दलित शब्द की लोकप्रियता का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। यह विगत दो–तीन दशकों में ही प्रचलित हुआ है; अन्यथा इसके पूर्व गाँधीजी का 'हरिजन' और 'आदिवासी' शब्द ही अधिक प्रचलित था। इस प्रकार दलित एक गतिशील शब्द है, जो एक खास सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान को सूचित करता है। साथ ही इसमें एक विंशिष्ट आन्दोलनकारी चेतना है। किन्तु इसके प्रयोग में अभी पूरी स्थिरता नहीं आयी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

है। कुछ विचारक इसे केवल अनुसूचित जाति तक ही सीमित रखना चाहते हैं, तो कुछ की राय में आदिवासी और अन्य अनेक पिछड़ी जातियों समेत सभी धर्मान्तरित पिछड़ा समुदाय भी दलित हे।

दलित लेखक और विचारकों में डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन के अनुसार ''दलित वह है जिसे भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है।'' कंवल भारती का मानना है कि ''दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे कठोर और गन्दे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है, जिसे शिक्षा और स्वतन्त्र व्यवसाय करने से मना किया गया और जिस पर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वहीं और केवल वहीं दलित है और इसके अन्तर्गत वही जातियाँ आती हैं, जिन्हें अनुसूचित जातियाँ कहा जाता है।''

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. भारतीय समाज में ब्राह्मण और शूद्र–संस्कृति और प्रति–संस्कृति का द्वन्द्व : भवदेव पाण्डेय 'कथा क्रम'– नवम्बर, 2000।
2. शूद्रों का इतिहास : रामशरण शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 36–37
3. शूद्रों का इतिहास : रामशरण शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 37।
4. हू वेयर शूद्राज : डॉ0 अम्बेडकर, पृ. 239, एथनालाजी ऑफ महाभारत (जी.जे. हेल्ड), पृ. 89–95 स्टडीज इन इंडियन सोशल पालिटी, पृ. 28–30।
5. शूद्रों का प्राचीन इतिहास : रामशरण शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 38
6. आधुनिकता के आइने में दलित : सं. अभय कुमार दूबे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 196।
7. दलित न्यू कल्चर कंटेक्स्ट फॉर ऐन ओल्ड वर्ल्ड, कंट्रीब्यूशन टु एशियन स्टडीज : इलियनर जिलियट, 11, 1978, पृ. 77।
8. 'युद्धरत आम आदमी', अंक : 41–42, वर्ष 1998. डॉ0 श्यौराज सिंह बेचैन, पृ. 14।
9. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र : ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. –16।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

10. आधुनिकता के आईने में दलित : सं0 अभय कुमार दूबे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 209 |